अमूल्य माणकों का व्यापार

कहते हैं, ईश्वर करे कि राजा के घर में भी बेटी न जन्मे परन्तु गोपी की तो दो बेटियाँ थीं। एक सगी और दूसरी सौतेली। न जाने कैसे बेचारी ने दोनों को पढ़ा लिखा कर बड़ा किया था। उन दोनों की आयु में भी मात्र एक दो वर्षों का अन्तर था। आज उसकी सगी बेटी की सगाई तय होनी है। गोपी ने केकों, पेस्ट्रियों और सूखे मेवों की प्लेटें भर कर उन पर रेशमी रूमाल डाल दिया था। सावित्री और सरोज संभावित दूल्हे की बहनें थीं जो आज लड़की देखने के लिये आने वाली थीं। उन्हें अन्दर घुसते देख गोपी इस प्रकार उठ खड़ी हुई ताकि प्लेटों पर पड़े रूमाल का कोना कुछ हट जाये। शायद वह लड़के वालों को दिखाना चाहती थी कि कितनी सम्पन्न है। उसने दूर से ही कुछ जोर से चिल्लाते हुए कहा, ''आइये आइये, आपका स्वागत है। बहुत देर कर दी आने में।''

सरोज जो मोटी थी, उसने अपने शरीर को शक्कर के बोरे की भाँति, कुर्सी पर फेंक कर हाँफते हुए कहा, ''भई, बात ही न पूछो। हम निकले तो बहुत पहले थे, परन्तु देख रही हो, आजकल क्या माहौल चल रहा है। भगवान न करे कोई लड़का विदेश से लौटे। फिर तो औरतें, लड़कियाँ दिखाने के लिये जान खा जाती हैं। सावित्री भी क्यों चुप रहती। उसने कहा, ''बहन, आजकल बेटियाँ हो गई हैं बोझ। सो हर कोई कहती है कि मेरी बारी पहले आये।''

सावित्री ने लड़की की माँ को झुकाने का प्रारम्भिक प्रयत्न तो अच्छा किया, परन्तु मन उसे धिक्कारने लगा कि जिस महिला ने उसे खिलाने के लिए इतने व्यंजन रखे हैं, वह उसके भाई के वेतन की राशि सुन कर साफ इन्कार न कर दे अथवा कहे, ''मेरी बेटी दो तीन सौ कमा लेती है। मुझ पर कौन सा बोझ है?''

लड़की की माँ अभी कुछ कहे, इससे पहले ही सरोज ने उसके चेहरे पर बल देखकर दूसरा तीर मारा, ''बहन, सावित्री का कथन अपने लिये मत समझना। तुमने तो बेटियों को बड़े लाड़ प्यार से पाला है। तुझ पर कौन सा बोझा हैं वे। मैंने तो सुना है कि तुम सब कुछ दोगी।'' परन्तु मन में कहने लगी, ''सावित्री न जाने क्या कह रही है। लड़कियाँ कमा रही हैं। किसी पर बोझ थोड़े ही हैं। कहीं बना बनाया काम न बिगड़ जाये।''

सावित्री थोड़ी लज्जित हुई, परन्तु फिर भी लाज बचाने के लिये कहने लगी, ''मैं तो अपनी पड़ोसिन की बात कह रही थी। घर से निकले तो बांह पकड़ कर कहने लगी,

''मैंने अपनी भानजी को बुलाया है, पहले उसको दख लो।''

गोपी के हाथों में से मानो कुछ गिर गया। उसके सीने में एक टीस उभरी। जब रुकमणी अभी पैदा ही हुई थी, तभी से उसके मन में तमन्ना थी कि बेटी ब्याहेगी, दामाद आयेगा, चहल पहल हो जायेगी। लेकिन लड़की 24 वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी थी, फिर भी कोई रिश्ता तय नहीं हो रहा था। इसलिये माँ को चिन्ता लग गई थी। दूसरी लड़की की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। उसने सोचा कि वह उन्हें कह दे कि फिर मेरे पास क्यों आई हो, जब लड़की देख ली है। परन्तु छाती पर हाथ धर कर दर्द पीते हुए उसने कहा, '' श्री राम!''

सरोज ने लड़की की माँ की यह स्थिति भांपते हुए मन में खुश होते हुए कहा, ''देखो तो, माई को दिल में दर्द हो रहा है। दूसरी लड़की देखने की गप्प नहीं हाँकते तो आजकल लड़की की माँ से दहेज लेना सरल थोड़े ही है।'' और उसने एकदम चिकनी चुपड़ी बात बनाते हुए कहा-''क्यों बहन, तुम्हारे सीने में दर्द है क्या?''

लड़की की माँ ने अपने कम कमाऊ पति के दुख को याद कर औपचारिकता निभाते हुए दुखी स्वर में कहा, ''मेरे पास सुख तो बहुत हैं फिर भी डाक्टर कहता है मन को खुश रखा करो, नहीं तो दिल की मरीज बन जाओगी।''

सावित्री अपनी छोटी बेटी को भी साथ ले आई थी, जो बार-बार खाने की वस्तुओं की ओर देख रही थी। अब तो उँगली का इशारा कर माँ का पल्लू भी खींचने लगी। गोपी सुलग गई। उसने मन में कहा, ''लड़की देखने आई हो तो यह भुक्खड़ बिल्ली साथ में क्यों लाई हो? ये ले, बर्बाद कर, तीन आने की पेस्ट्री!'' उसने एक पेस्ट्री उठा कर बच्ची के हाथ में दी। ऊपरी मन से प्यार करते हुए उसने कहा, ''कितनी प्यारी लड़की है।''

परन्तु मीनू, जिसने बिरले ही ऐसी चीज़ देखी होगी, उसने सीधे-सीधे तोतली भाषा में कहा, ''मुफ़त में दे रही हो न? हम लोग पैछे बैछे नहीं देंगे।''

गोपी जलकर राख हो गई कि जिनकी बुनियाद इतनी निर्लज, उन्हें अपनी लड़की कैसे ब्याहेंगे। फिर भी उसने कहा, ''खाते पीते घर की लड़की है। पैसे ख़र्च करना तो उसे अच्छा ही नहीं लगता।''

सावित्री ने यह वार झेल लिया। उसने बात को बदलते हुए कहा, ''बहन, तुम तो अपनी रुकमणी को बुलाओ, देर हो रही है।''

लड़की की माँ ने गुस्से से बुलाया, ''सोनी ए सोनी, बेटी, चाय तो ले आ।''

सरोज और सावित्री तो अवाक् रह गईं। वे एक दूसरे की ओर देखते हुए इशारों से पूछने लगीं, ''सोनी, कौन है?'' मध्यस्थ महिला ने तो कहा था कि लड़की का नाम 'रुकमणी' है! सावित्री तो सरोज की ओर नाराजगी से घूरने लगी कि देख गप्प बना कर

लाये थे कि दूसरी लड़की भी देख कर आये हैं तो यह औरत अपनी लड़की नहीं दिखा रही है।

सरोज का चेहरा उतर गया। मन में कहने लगी, मैंने तो अधिक दहेज लेने के लिये उसे डराया था। मुझे क्या पता था कि माई ऐसी धूर्त है।

अब गोपी के खुश होने की बारी थी। लड़के वालों की नज़रें देखकर मन ही मन में उसने मुँह बनाते हुए कहा, ''तुम्हारे जैसों को अपनी लाड़ली सगी बेटी थोड़े ही दूँगी। सौतेली बेटी लंबी खजूर का पेड़ हो गई है। तुम चाहो तो उसे देख कर जाओ।''

गोपी ने हँसते हुए कहा, ''हाँ-हाँ, उसका नाम तो रुकमणी है, परन्तु उसके पिता उसे लाड़ से सोनी कहते हैं। है भी सोना, खरा सोना।'' परन्तु सोनी को ट्रे में चाय के कप लाते देख कर मन में कहा, छोरी कहाँ सोना है। काली कलूटी जरूर है। जैसी अंदर काली वैसी बाहर काली।

सरोज और सावित्री तो लड़की को नख शिख तक ऐसे जाँचने लगीं मानो ठीकरे का बर्तन खरीदने आई थीं। आखिर सरोज ने भौंहें तानते हुए कहा, ''तू ने बेटी तो दूध पी कर जनी है। है बेशक खरा सोना।''

गोपी चिंताग्रस्त हो गई। उसने मन में कहा, ''इसे दूध पी कर तो नहीं जना है, अलबत्ता इसे ज़हर के घूंट पी कर अवश्य पाला है। औरतों की जीभ बजती रहती है। खाली बोलती रहती हैं कि खरा सोना है। अब यदि इन्हें अच्छी लगी है तो भले ही केक वेक खाकर मुँह मीठा करें, तो मैं भी समझूं कि एक बोझ हटा।'' बेटी से चाय की ट्रे लेकर उसने टेबल पर रखी और नाश्ते की प्लेटें सरका कर कहा, ''अरी, तुम लोगों ने तो कुछ खाया ही नहीं है। लो लो, यह मीठा तो मुख में डालो चाय ठंडी न हो जाये।''

सावित्री तो लड़की देख कर बदल गई थी। मन में कहने लगी,''माई अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन रही है। लड़की का न चेहरा मोहरा अच्छा है, और न रंग। फिर भी कह रही है लड़की खरा सोना है। उसने साड़ी तो ऐसी पहनी है, मानो गुजरातिन हो। छोरी पड़ोस से ही उधार की साड़ी लेकर पहन लेती।'' सरोज ने कहा,''अच्छी लड़की है, ऐसी वैसी साड़ी में भी जंच रही है।''

गोपी ने कहा, ''तो और क्या? इसके पिता जी कहते हैं कि यह बेटी एक साड़ी में ही स्वीकार कर ली जायेगी। परन्तु मैं कहती हूँ, केवल लड़की थोड़े ही देंगे। कहते हैं कि माँ भले ही चक्की पीसे परन्तु फिर भी बेटी तो बेटी होती है। सो माँ बाप थोड़े ही देने से चूकेंगे।'' गोपी ने यह सब दोनों के उतरे हुए चेहरों को देख कर कहा। परन्तु मन में कहने लगी, ''दोनों के चेहरे उतर गये हैं, कहीं से कर्ज़ लेकर ही थोड़ा बहुत दूँगी। बाकी छोरी मेरे घर से निकले तो बला टले।''

सरोज ने इतने में गोपी की चूड़ियों को हाथ लगाकर कहा, ''डिज़ाइन तो बड़ी

अच्छी बनवायी है। बेटी को तो अवश्य हीरों वाला कँगन दोगी, और दूसरा दहेज तो है ही।''

अब गोपी गुस्से से तमतमा गई। मन ही मन में आगंतुकों को कोसने लगी। मन में कहने लगी, ''अरी ऐदुखी भूखी औरतों, मेरी चूड़ियों में क्यों आँखें डाल रही हो? आँख के अँधे नाम नयनसुख। थोथा चना बाजे घना। अब इन्हें हीरों वाला कँगन चाहिये।'' लेकिन ऊपर से मुख पर फीकी मुस्कराहट लाकर उसने कहा, ''बहन, ये तो हैं अमूल्य माणकों का व्यापार। जो लड़की को लेना होगा वह तो लेगी। बाकी हम लोग हीरे वीरे कहाँ दे पायेंगे!''

सोनी, जो चाय रख कर कुर्सी पर बैठ गई थी, उसके कान ही लाल हो गये। उसकी बिक्री तो इस प्रकार ठोक बजा कर हो रही थी जैसी ठीकरे के बर्तन की भी मुश्किल से होती होगी।

सावित्री ने लड़की से पूछा, ''बेटी, कितनी अंग्रेजी पढ़ी है?''

सोना ने बिल्कुल ही नम्रता से उत्तर दिया, ''मैट्रिक पास की है।''

सरोज को लड़की के मैट्रिक पास होने की बात अच्छी नहीं लगी।

उसने नाक सिकोड़ ली। उसके मन ने कहा, यदि यह भोंडी कहती है कि मैंने मैट्रिक पास की है तो तुम भी उससे कह दो कि मेरा भाई भी दो कॉलेजों में पढ़ा है, चल। उसके बाद उसने लड़की की माँ की ओर मुँह करके कहा, ''हमारा हीरा भी दो कॉलेजों में पढ़ने के बाद विदेश गया था। परन्तु यदि लड़की ने मैट्रिक पास की है, तो नौकरी भी अवश्य करती होगी?''

गोपी अब उठ खड़ी हुई। कहने लगी, ''ना बाबा। नौकरी हमारे बाप दादाओं ने की है जो हम करेंगे? लो लो, चाय पीयो।'' उसके शब्दों में ऐसी झिड़की थी, मानो कह रही हो, ''तुमने भी रिश्ता जोड़ा! तुम्हें लड़की चाहिये नौकरी करने वाली। ऊपर से हीरों का कंगन चाहिये। लड़के के लिये तभी मैंने सुना था कि उसे कोई सेठ नौकरी ही नहीं दे रहा है। अब कमाने वाली लड़की आए तो लड़के को कमा कर खिलाये। तुम लोग केवल चाय पीकर रवाना हो जाओ। केक पेस्ट्री न खाओ तो न खाओ। आये तो वैसे ही उधार पर हैं।''

सरोज और सावित्री के चेहरे उतर गये। वे रूखी चाय पीने लगीं। हालांकि उन की आँखें प्लेटों में थीं। परन्तु गोपी उन्हें खाने के लिये कहे क्यों? कहे भी कैसे? यदि वह उन्हें मीठा खिलाती है तो कहेंगी कि सगाई हो गई और फिर इन सुरसाओं के मुख कहाँ से भरेगी? फिर इस बात की चर्चा होने लगेगी कि रिश्ता टूट रहा है। गोपी को पहले भी ऐसे दो अवसरों पर अनुभव मिल चुका है।

इतने में एक लड़की ने जल्दी जल्दी अंदर आकर कहा, ''सोनी, रुकमा कहाँ

है ?'' सभी के चेहरे उतर गये। गोपी और उसकी बेटी तो सहम गईं। सरोज और सावित्री चाय के आधे भरे कप बीच में ही छोड़ कर लाल सुर्ख़ चेहरे बना कर उठ खड़ी हुईं। मानो आँखों से कहती जा रही थीं, ''चल री दगाबाज़!'' तुमने एक के बदले दूसरी लड़की दिखाई है। उन्होंने फीके चेहरे से गोपी से कहा, ''हम चलती हैं।''

शीला ने टेबल पर एक पुस्तक रख कर कहा, ''माफ करना सोनी, मैं जाती हूँ। तू कार्यालय से शीघ्र ही छुट्टी लेकर चली गई। तेरी पुस्तक लौटाने आई हूँ, सोचा कहीं पुस्तकालय में वापिस न करनी हो।''

अब सोनी अपने को संभाल चुकी थी। वह उठी और सहेली का हाथ पकड़ कर दूसरे कमरे में चली गई। पीछे केवल एक सर्द आह छोड़ गई, जिसकी प्रतिध्वनी कमरे की दीवारों से टकरा कर जलते शोलों पर अचानक पानी पड़ने जैसी सनसनाहट करती रही। गोपी बहुत देर तक सुन्न सी कुर्सी के ऊपर बैठी रही।

अनुवाद : खीमन यू. मूलाणी

□□□